अद्यावधि अपन स्वरूप सबठाम सब समय मे एक रूपक स्थिर रखने अछि। तकर कारण ई भेल जे संस्कृत नामक जे भाषा पाणिनि द्वारा सुसंस्कृत भेल से एहि रूप मे कतहु बाजल नहि जाइत छला। ओ वर्ग विशेषक भाषा छल, शिष्टक भाषा छल, द्विजातिक भाषा छल, पण्डितक भाषा छल। भारतीय भाषाक पूर्व समय मे केहन स्वरूप छल तकर सब सँ प्राचीन वर्णन ओ विश्लेषण हमरा सभके महर्षि वाल्मीकिक आदि काव्य मे भेटैत अछि। प्रसंग अछि अशोक वाटिका मे सीता हनुमानक संवादक। जखन हनुमान अपना के सीताक समक्ष पवैत छथि तखन हुनका वितर्क होइत छैन्ह जे हिनका कोन भाषामे टोकियन्हि। ओ निश्चय करैत छथि जे

" वाचं चोदाहरिष्यामि मानुषीमिह संस्कृताम
यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति
वानरस्य विशेषेण कथं स्यादभिभाषणम्।
अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत ॥

(सुन्दर काण्ड, सर्ग 10 - श्लोक सं. 17-19)

क्रमशः —

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर

व्याख्यान - 1

Page No.
Date: / /

दिनांक - 02/07/2020 स्नातक तृतीय खंड

मैथिली कथा साहित्यक परम्परा

मिथिलाक विद्वान मनीषी लोकनिक ई विशेषता रहल अछि जे साहित्यक सभ रूपक विधाक आरम्भ अथवा सम्बन्ध प्राचीन ग्रन्थ, वेद आ उपनिषद सँ जोड़ि कऽ मानैत छथि। मुदा मैथिली साहित्यमे किछु एहन साहित्यिक विधा सभ अछि जे प्राचीन परम्परागत शास्त्र पुराण सँ आयल अछि संगहि पश्चिमी देशक साहित्य सँ सेहो प्रभावित रहल अछि। एहि सन्दर्भ मे प्रो. रमानाथ झाक उक्ति द्रष्टव्य थिक - "गद्य काव्यक एक गोट प्रधान अंग थिक कथा साहित्य' ओ ताहि कथा साहित्यक एक भेद थिक 'गल्प' ओ दोसर थिक 'उपन्यास' एहि दुहूक विकास पाश्चात्य देश सबहिक साहित्यमे भेल छैक ओ पश्चिमाहिक प्रणाली पर भारतीय भाषा सबहु मध्य एकर प्रभाव भए रहल अछि"।

विदित अछि जे गद्य साहित्यक आरम्भ मिथिलामे 'वर्णरत्नाकर'क रचनाकालहि सँ प्रारम्भ भऽ गेल छल। पश्चात् विद्यापतिक आविर्भाव भेलें आ विद्यापति आदि साहित्यक समृद्धिक हेतु संस्कृत भाषामे साहित्य सर्जना कयलनि। ओहि कालमे संस्कृत शिष्ट साहित्यक भाषा मानल जाइत छल। एहि सम्बन्ध मे प्रो. रमानाथ झा लिखैत छथि - इहा विश्वक इतिहास मे संस्कृते टा एहन भाषा अछि जे भगवान पाणिनी द्वारा सुसंस्कृत भेलि भऽ तेना प्रतिष्ठित भेल अछि जे